दैनिक जागरण 17/07/2026

खेत में ढैंचा पलटने के बाद करें धान की रोपाई

- कम लागत में मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने का है प्रभावी माध्यम
- प्रति हेक्टेयर 80-120 किग्रा नाइट्रोजन उपलब्ध कराता

ढैंचा के बारे में जानकारी देते सीएसए के कृषि वैज्ञानिक डा. खलील खान ● सीएसए

जागरण संवाददाता, कानपुर : जिन किसानों ने गेहूं की कटाई के बाद खेतों में ढैंचा उगाया है, वह धान की बोवाई करने की तैयारी कर रहे हैं तो वह ढैंचा को खेत में पलट दें, फिर तीन से पांच दिन बाद धान की बोवाई करें। इससे उत्पादन बढ़ेगा। धान की अच्छी पैदावार के लिए किसान खेत की गहरी जोताई करें और तीन से पांच दिन का अंतर जरूर रखें। चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) के कृषि विज्ञानी डा. खलील खान ने बताया कि पहले ढैंचा को अपने खेत में ट्रैक्टर से जोताई कर उसे मिट्टी से दबा दें। इससे मिट्टी में मौजूद जैविक अवशेष तेजी से सड़ते हैं और लगभग 20 से 25 टन प्रति हेक्टेयर हरा बायोमास मिट्टी में मिल जाता है। इससे करीब चार बोरी यूरिया के बराबर नाइट्रोजन प्राकृतिक रूप से उपलब्ध हो सकती है।

डा. खान ने बताया कि खेत पलटने के तीन से पांच दिन बाद धान की बोवाई करना सबसे अधिक लाभकारी रहता है। इस दौरान मिट्टी में नाइट्रोजन की उपलब्धता बढ़ जाती है, जिसका लगभग 90 प्रतिशत हिस्सा धान के पौधों को मिल जाता है। इससे पौधों की बढ़वार अच्छी होती है और उत्पादन भी बढ़ता है। उन्होंने कहा कि किसान खेत पलटने के बाद दो से तीन इंच पानी बनाए रखें। इससे हरी खाद का विघटन बेहतर ढंग से होता है और मिट्टी में पोषक तत्व बढ़ते है। इस तकनीक को अपनाकर किसान धान की फसल में बेहतर उत्पादन के साथ उर्वरकों का खर्च भी कम कर सकते हैं।

उन्होंने बताया कि ढैंचा एक दलहनी फसल है, जिसकी जड़ों में मौजूद जीवाणु वातावरण से नाइट्रोजन लेकर उसे मिट्टी में स्थिर करते हैं। इससे प्रति हेक्टेयर 80 से 120 किग्रा तक प्राकृतिक नाइट्रोजन उपलब्ध होती है। साथ ही, ढैंचा के सड़ने पर मिट्टी में जैविक कार्बन, फास्फोरस, पोटाश और अन्य सूक्ष्म पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ जाती है। मिट्टी भुरभुरी होती है, जलधारण क्षमता बढ़ती है और क्षारीय व लवणीय भूमि के सुधार में भी मदद मिलती है। ढैंचा के प्रयोग से धान की फसल में यूरिया की आवश्यकता करीब 30 प्रतिशत तक कम हो सकती है। इससे खेती की लागत घटने के साथ मिट्टी की उर्वरता लंबे समय तक बनी रहती है।